बी.एस.ओ.सी.-107 : लैंगिक समाजशाास्त्र
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-107**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -107 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. श्रम से लैंगिक भूमिका किस प्रकार जुड़ी हुई है? स्पष्ट कीजिए। 20

2. 'पुरुषत्व एक सामाजिक निर्माण है।' विवेचना कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. महिलाओं की अधीनता आप क्या समझते हैं? 10

4. लैंगिक समाजीकरण से आप क्या समझते हैं? 10

5. महिलाओं के विरुद्ध यौन हिंसा को नियंत्रित करने हेतु किए गए प्रमुख कानूनी उपायों की चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. औपनिवेशिक भारत के दौरान हुए किसी एक महिला सामाजिक सुधार आंदोलन की चर्चा कीजिए। 06

7. महिलाओं द्वारा किए जाने वाले कौन-कौन से कार्य राष्ट्रीय आय अथवा आर्थिक गणना में शामिल नहीं किए जाते। 06

8. जैविक लैंगिक और सामाजिक लैंगिक के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। 06

9. जेंडर (Gender) और जीवविज्ञान (Biology) के मध्य संबंध की व्याख्या कीजिए। 06

10. 'प्रभुत्वशाली पुरुषत्व' (Hegemonic Masculinity) से आप क्या समझते हैं? 06

1. श्रम से लैंगिक भूमिका किस प्रकार जुड़ी हुई है? स्पष्ट कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

श्रम का अर्थ केवल वेतन लेकर किया गया कार्य नहीं है। घर में भोजन बनाना, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना, खेत में उत्पादन करना, कारखाने में वस्तु बनाना तथा किसी सेवा का संचालन करना —ये सभी श्रम के रूप हैं। **लैंगिक भूमिका** से आशय स्त्रियों और पुरुषों से समाज द्वारा अपेक्षित व्यवहार तथा उत्तरदायित्वों से है। श्रम और लैंगिक भूमिका का संबंध इस तथ्य से बनता है कि समाज अनेक कामों को 'महिलाओं का' या 'पुरुषों का' काम मानकर बाँट देता है। ऐसा विभाजन प्राकृतिक और अपरिवर्तनीय न होकर ऐतिहासिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से निर्मित होता है।

श्रम का लैंगिक विभाजन। अधिकांश समाजों में उत्पादन और पुनरुत्पादन से जुड़े कार्यों के बीच एक पदानुक्रम बनाया गया है। बाजार में आय उत्पन्न करने वाला कार्य अधिक दिखाई देता है, जबकि घर की सफाई, भोजन, बच्चों का पालन-पोषण और परिवार के सदस्यों की देखभाल जैसे कार्य प्रायः अवैतनिक रहते हैं। इन्हें स्त्री की 'स्वाभाविक जिम्मेदारी' मान लेने से उनके आर्थिक और सामाजिक मूल्य को कम आँका जाता है। दूसरी ओर पुरुष से परिवार की आय अर्जित करने वाले व्यक्ति की भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार लिंग के आधार पर कामों का निर्धारण और काम के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा का वितरण एक-दूसरे को मजबूत करते हैं।

परिवार और समाजीकरण की भूमिका। बचपन में लड़कियों को घरेलू काम सिखाए जाना तथा लड़कों को बाहर के काम और तकनीकी उपकरणों की ओर प्रोत्साहित करना श्रम-विभाजन की शुरुआती प्रक्रिया है। विद्यालय, पाठ्यपुस्तकें, विज्ञापन तथा लोकप्रिय मनोरंजन इन रूढ़ियों को दोहरा सकते हैं। परिणामतः किसी काम में महिलाओं की कम भागीदारी को उनकी 'कम रुचि' या 'कम क्षमता' का प्रमाण समझ लिया जाता है, जबकि अवसर, सुरक्षा, प्रशिक्षण और सामाजिक अनुमति में अंतर वास्तविक कारण हो सकते हैं।

वेतनभोगी रोजगार में असमानता। स्त्रियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, वस्त्र निर्माण, घरेलू सेवाओं और देखभाल से जुड़े पेशों में अधिक दिखाई दे सकती हैं, जबकि तकनीकी नेतृत्व तथा कुछ निर्माण-संबंधी क्षेत्रों में उनका प्रतिनिधित्व कम रहता है। इसे व्यावसायिक पृथक्करण कहते हैं। एक ही संस्था के भीतर निर्णय लेने वाले उच्च पदों पर पुरुषों का प्रभुत्व और निम्न पदों पर महिलाओं की अधिकता ऊर्ध्वाधर पृथक्करण का उदाहरण है। समान या समान प्रकृति के कार्य के लिए असमान पारिश्रमिक, पदोन्नति में बाधाएँ और असुरक्षित कार्यस्थल लैंगिक असमानता को बढ़ा सकते हैं। इसलिए केवल रोजगार मिलने को वास्तविक समानता मान लेना पर्याप्त नहीं है।

अदृश्य श्रम और दोहरा बोझ। बहुत-सी महिलाएँ घर के बाहर आय अर्जित करने के बाद भी परिवार के अधिकांश काम करती हैं। इसे दोहरा कार्यभार कहा जाता है। उदाहरण के लिए कोई महिला दिन भर दुकान में काम करके लौटने के बाद भोजन बनाने, बच्चे का गृहकार्य देखने और बीमार परिजन की देखभाल का दायित्व भी निभाती है। इन गतिविधियों में समय और कौशल लगता है, फिर भी राष्ट्रीय आय की सामान्य बाजार-आधारित गणना में परिवार के लिए की गई अधिकांश अवैतनिक सेवाएँ दर्ज नहीं होतीं। समय-उपयोग सर्वेक्षण इस असमानता को समझने का महत्वपूर्ण साधन है।

ग्रामीण एवं अनौपचारिक श्रम। कृषि में बीज छाँटना, रोपाई, पशुपालन, जल तथा ईंधन लाना और उपज का प्रसंस्करण जैसे काम महिलाओं की महत्वपूर्ण आर्थिक भागीदारी दर्शाते हैं। किंतु भूमि पर